Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

शिक्षा में जनजाति महिलाओं के बढ़ते कदम : भविष्य में संभावनाएँ

सुश्री प्रथा कलासुआ | शोधार्थी, मो.सु.वि.वि. उदयपुर

ABSTRACT:

'शिक्षा जीवन की तैयारी नही, ये अपने आप में ही एक जीवन है।' ..... जॉन दवे

मनुष्य के जीवन में अच्छी शिक्षा, कौशल व स्वास्थ्य प्राप्त होने से वह राष्ट्र के लिए मानव पूंजी के रूप में कार्य करता है, जो कि भौतिक पूँजी के कही अधिक महत्त्व का है। प्रत्येक राष्ट्र इस 21वीं सदी में अपने नागरिकों को प्रदान करने वाली सुविधाओं में प्रथम रूप में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के अवसर उपलबध कराने हेतु तत्पर है यही कारण है कि भारत की स्वतंत्रता के समय सम्पूर्ण भारत की साक्षरता दर केवल 18.71: थी, जो 2011 की जनगणना के आंकडो के अनुसार 74: तह पहुँची है। प्रत्येक राष्ट्र ने समस्त नागरिकों के लिए यह सुविधा मुहैय्या कराने का प्रयास किया हैं प्राचीन भारत देश में शिक्षा के प्रमुख केन्द्रों के रूप में नालंदा व तक्षशिक्षा विश्वविद्यालय ने अपनी पहचान विश्व में बनाई थी। परन्तु बदलती परिस्थितियों में भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार अंग्रजों के माध्यम से हुआ, जिन्होंने भारतीय शिक्षा को कम आंका व पाश्चात्य जगत के साहित्य, विज्ञान, गणित इत्यादि विषयों को पढ़ाया जाने लगा, साथ ही तत्कालीन भारत के महापुरूषों ने अपने प्रयासों के माध्यम से भारतीय जनमानस म शिक्षा के प्रति जनचेतना का कार्य किया व स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार ने विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से शिक्षा नीतियों से विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किये, जिनकी प्राप्ति समय–समय पर होती है। उसी के परिणाम स्वरूप हमारे देश में साक्षरता दर प्रति दशकीय वर्षो में वृद्धि की सूचक रही हैं।

किसी भी राष्ट्र के विकास में पुरूषों के योगदान के साथ–साथ महिलाओं का योगदान भी राष्ट्र को विकास के अग्रिम पायदान पर पहुँचा सकता है। अतः महिलाओं की शिक्षा का महत्त्व ओर बढ़ जाता है जब देश की आधी आबादी महिलाओं की हो, जहाँ शिक्षा के समान अवसर महिला–पुरूषों के लिए उपलब्ध हो रहे है। आबादी को नियंत्रित करने व दुनिया को बेहतर बनाने के लिए लड़कियों को शिक्षित करना सबसे अच्छा उपाय माना गया है। आक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी की वर्ल्ड पॉपुलेशन एंड वूमन केपिटल इन ट्वेंटी फर्स्ट सेंचूरी स्टडी के अनुसार लड़की और लड़के को 10वीं तक नियमित शिक्षा मिले तो 2050 में दुनिया की आबादी 150 करोड़ के कम के स्तर पर होगी, वही बुकिंग्स इंटीट्यूशन की रिर्पोट के अनुसार लड़कियों की शिक्षा और जन्म दर के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि शिक्षा लड़कियों को परिवार नियोजन की समझ देती है। साथ ही शिक्षा उन्हें बाल विवाह व कच्ची उम्र मे माँ बनने से भी बचाती है।[1]

दुनिया भर में महिलाओं के साथ भेदभाव और उनके अधिकारों का हनन सदियों से होता आ रहा है, लेकिन अब इसमें धीर–धीरे सधार भी हो रहा है इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि दुनिया में हर 10 में से 9 पुरूषों का मानना है कि देश की तरक्की के लिए महिलाओं का उच्च शिक्षा दिलाना जरूरी है।[2]

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय की स्थिति देखने पर ज्ञात होता है कि जनजाति महिलाओं में शिक्षा प्राप्ति के प्रति रूचि व चेतना कम ही थी, क्योंकि तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों ने इन महिलाओं को अपने गृहस्थी व कृषि कार्यों के अलावा अन्य जिम्मेदारियों का वहन करने को बाह्य बनाती है। उस समय इन महिलाओं के पास दैनिक कार्यों के रूप में लम्बी सूची होती थी, जिन्हे पूरा करते करते पुरा दिन व्यवस्तता में गुजर जाता था, और वर्तमान में प्राप्त संसाधन व सुविधाओं का अभाव था, इस कारण महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रही।

परन्तु समय के साथ बदलती परिस्थितियों ने जनजाति महिलाओं की सोच व उनकी स्थिति के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध हुई है। आदिवासी महिलाओं ने 1960 के दशक के पश्चात् शिक्षा प्राप्ति में कदम बढायें व स्वतंत्र भारत में खुलने वाले विद्यालयी उनकी शिक्षा में मील का पत्थर साबित होने लगें। वर्तमान में महिला शिक्षा के उपलब्ध अवसरों को देखा जाये तो हम पाते है कि विभिन्न–विभिन्न क्षेत्रों में जन जागृति समय के अनुरूप आती रही है जिसका परिणाम हमें वहाँ की साक्षरता दर व जनजागृति, विकास कार्यो व उनके द्वारा लिये जाने वाले निर्णयों के आधार पर करते है।

KEYWORDS:

शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता

दक्षिणी राजस्थान की जनजाति महिलाएँ अपने जीवन के आरम्भिक समय से लेकर अन्त तक स्वतंत्र व स्वच्छंद जीवन यापन करती है। अपने पिता के घर में विवाह से पूर्व ही शिक्षा प्राप्ति के साथ–साथ कृषि से संबंधित समस्त कार्य बड़ी तीव्रगति से समयोजित करना सीख लेती है अपने घर मे माता–पिता की अनुपस्थिति में पुरे घर की देखरेख के साथ पशुधन व कृषि कार्य को बड़ी निपुर्णता से संभाल लेती है। समय व परिस्थितियों में आये परिवर्तन के साथ जनजाति महिलाओं ने अपने जीवन में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाकर न केवल परिवार बल्कि समाज में अपनी जागरूकता को बढ़ाया है, फिर भी उनकी स्थिति को ज्यादा सशक्त बनाना है, ताकि वह अपनी व समाज की सामाजिक –आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ शैक्षिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हो तब उनका स्थान और भी सर्वोच्च स्थिति में पहुँच सकता है, वह खुलकर अन्य गतिविधियों में भाग ले पायेगी और उन्हे मूलभुत सुविधाओं के लिए संघर्ष नही करना होगा। आदिवासी समाज में सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाना व महिलाओं का सशक्तिकरण करना मुख्य उद्देश्य में शामिल है। ग्रामीण भारत के वंचित तबके को हम विकास की श्रेणी में खड़ा कर सकते है, तभी सम्पूर्ण भारत का चहुँओर विकास संभव है।

अलग–अलग शैक्षणिक संस्थाओं का स्वतंत्रता से पूर्व दक्षिणी राजस्थान में संचालित होने के कारण प्राथमिक शिक्षा के साथ जनजाति महिलाओं ने अपनी आरंभिक शिक्षा प्राप्त की व धीरे–धीरे माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है। साथ ही इस 21वीं सदी में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी जनजाति महिलाओं की पहुँच आरंभ हुई है, जो आने वाले भविष्य में दक्षिण क्षेत्र का प्रगति का सूचक मानी जा रही है। आरंभ से कई विशेष क्षेत्र जैसे खेरवाड़ा में शैक्षणिक माहौल मिलने के कारण आज इस क्षेत्र में कई जनजाति महिलाए–युवतियाँ मेडिकल, नर्सिंग, शिक्षा प्रशासनिक, इत्यादि क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही हैं यहाँ की लड़कियों ने अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर अपने आस–पास की अन्य लड़कियों का भी प्रेरणा प्रदान कर रही हैं शोधार्थी द्वारा दक्षिणी राजस्थान की महिलाओं से शिक्षा के महत्त्व व जागरूकता के संबंध में उनकी अभिव्यक्ति निम्न रूप से प्राप्त हुई हैं।

'शिक्षा जीवन का अति आवश्यक पहलु है, जिससे हम अपना ज्ञान रहन–सहन का स्तर, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को जीवन पर्यन्त बढ़ा सकते है। शिक्षा से स्वयं का विकास एवं रोजगार में विकास कर सकते है। शिक्षा में सबसे महत्त्वपूर्ण यह भी है कि हम मानवीयता को बनाये रख सकते है। आजकल पढ़े लिखे शिक्षित लोग तो है पर समाज में आत्मीयता एवं मानवीयता से विकृत लोग भी है। शिक्षित होने से बुद्धिमता के साथ–साथ संयम, अहिंसा, आत्मीयता एवं मानवीय गुण भी आते है।

डॉ॰ स्वाति डामोर (32) खैरवाड़ा, उदयपुर

2. 'शिक्षा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सही शिक्षा से ही व्यक्ति के भविष्य का निर्माण होता है।'

मिनाक्षी मच्छार (35) ऋषभदेव, उदयपुर

3. 'शिक्षा ही जीवन को बनाती है। शिक्षा के बिना मनुष्य अधूरा है शिक्षा के बिना वह अज्ञानी रह जाता है।'

चन्द्रमुखी मीणा (22) सराड़ा, उदयपुर

4. 'जीवन में शिक्षा होना जरूरी है क्योंकि हम पढ़ेगें तो समाज भी आगे बढ़ेगा।'

मंजुला कुमारी (15) कोटड़ा, उदयपुर

5. 'शिक्षा हमें सामाजिक, राजनैतिक तथा समस्त आधुनिक मूल्यों के साथ जोड़ने का कार्य करती है, यह जीवन के वास्तविक मूल्य प्रदान करती है।'

डॉ॰ शीला कलासुआ (31) गिर्वा, उदयपुर

जनजाति महिलाओं के उक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि आज के यूग में आदिवासी महिलाएँ यदि शिक्षित हो तो वह अपने विचारों के साथ अपने जीवन स्तर व अपने आस–पास के सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र को प्रभावित करने के साथ–साथ उसमें निरन्तर आने वाले बदलावों को भी अपने स्वयं पर लागु करती है। यह सब तभी संभव हो पायेगा जब महिला शिक्षित हो, अतः शिक्षा एक ऐसा सशक्त माध्यम इस क्षेत्र के लिए साबित हो सकता है, जिसके द्वारा हम परिवर्तन ला सकते है। जहाँ पर वर्षों से महिलाएँ समस्याओं का सामना कर रही है। अपने आस–पास हो रहे बदलावों को देखकर वह अपना भविष्य सुनहरा बनाना चाहती है व इस अविकसित क्षेत्र में बदलाव की बयार लाना उसका अपना सपना है। शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में अपना नाम रोशन कर रही है, दक्षिणी राजस्थान की महिलाएँ भविष्य में शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में प्रगतिशील कदम ना केवल अपने लिए बल्कि सम्पूर्ण समाज को बढ़ाने के लिए उदाहरण अवश्य होगा।

सारणी सं॰ 1.1

क्र॰सं॰	वर्ष	साक्षरता दर जनजाति महिलाओं (प्रतिशत में)	
		राजस्थान	उदयपुर
1	1961	0.28	0.17
2	1971	0.49	0.30
3	1981	1.20	0.69
4	1991	3.46	2.28
5	2001	26.16	25.71
6	2011	37.3	61.82

Source:- Population fact and figures in Rajasthan 1961-2001

Population Projection Rajasthan (2001-2011) Provisional Rajasthan, Jaipur

उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के संदर्भ में जनजाति महिलाओं का शिक्षा के प्रति उत्साह प्रति दशकीय वर्षों में बढ़ता नजर आया है आरंभ में यह जहाँ 0.28: विद्यमान था अब 2011 की गणना अनुसार 37.3 हो गया है। यह तथ्य यह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि इस 21वीं सदी में शिक्षा के मार्ग पर अग्रसित होने से उन्हे अब विकट परिस्थितियाँ रोक नहीं सकती। आने वाले वर्षों में यह आकड़ा 50 प्रतिशत से भी ऊपर जाने की संभावना है व समस्त जनजाति महिलाएँ शिक्षित होकर अपने परिवार व समाज में उदाहरण प्रस्तुत कर अन्य को प्रेरणा प्रदान करती रही है।

जनजाति समाज में बढ़ते शिक्षा के कदम का में हमें इसी समाज की शिक्षित महिलाएँ व बड़े पदों पर आसीन कुछ उदाहरणो से भी प्राप्त होता है। वर्तमान में शिक्षा जगत में संयुक्त निदेशक के पद पर श्रीमती एंजलिका पलात कार्यरत है। साथ ही डूँगरपुर में जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर सुश्री इन्द्रा लट्ठा कार्यरत हैं इनसे पूर्व उदयपुर जिला शिक्षा अधिकारी के पद से श्रीमती कमलेश लट्ठा सेवानिवृत हो चुकी है। साथ ही वर्तमान में कई जनजाति महिलाएँ उच्च प्रशासनिक पदो पर सुशोभित है।

अतः स्पष्ट है कि यदि जनजाति महिलाओं को उचित शिक्षा समय पर प्राप्त होती है तो वह निश्चित रूप से अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर अपने समाज में व राष्ट्र को समर्पित सेवाए प्रदान करने को तैयार है।

शिक्षा प्राप्ति में आने वाली प्रमुख समस्याएँः–

1. इस क्षेत्र का **भौतिक परिवेश** यहाँ के जनजाति समुदाय को और भी पिछड़ा बनाता आया है, क्योंकि इस क्षेत्र में पहुँचने के लिए सर्वप्रथम ईकाई सड़क मार्ग का नितान्त अभाव दिखाई देता हैं जिससे आने वाला विकास का मार्ग अवरूद्ध हो जाता हैं परन्तु सड़क से लेकर अस्पताल, विद्यालय व आधार भूत सुविधाओं का अभाव इन्हें अपनी पूर्व परिस्थितियों में जकड़े हुए हैं चूकि गाँवों में छोटे–बड़े पहाड़–पठार, नदी–नाले प्राकृतिक सम्पदा से भरपुर ग्रामीण इलाकें जहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम से कम 5 किलोमीटर तक की दूरी पैदल तय करना आम बात है। यह स्थिति पूरे वर्ष भर बनी रहती है इन ऊँचे–ऊँचे व एकांत पगडंडी से निकलकर जनजाति लड़कियों आज शिक्षा प्राप्ति के लिऐ अपने घरों से निकल रही है, जिसमें उन्हें विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परन्तु वह अपनी पूर्व स्थापित परिस्थितियों को बदलने की इच्छा लेकर अपने घरों से निकल रही है।

2. **जन चेतना का अभाव** भी यहाँ की महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्ति में बाधक बना है, क्योंकि आज इस 21वीं सदी में इस क्षेत्र की महिलाएँ विद्यालय स्तर की शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात् कुछ ही संख्या में महाविद्यालय स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने घरों से निकल पाती है, क्योंकि यहाँ जनजाति परिवारों की निम्न आर्थिक स्थिति बच्चों व विशेषकर महिलाओं के आगे की शिक्षा में बाधक बन जाती हैं यदि इस क्षेत्र में उचित जनचेतना का प्रसार होता है तो यह युवतियाँ सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं व योजनाओं का लाभ को प्राप्त कर अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास कर रही है।

3. जनजाति महिलाएँ आरंभ से ही अपनी परिस्थिति सदैव एक समान मानकर प्रकृति की गोद में कृषि कार्य व जंगल से वानिकी जुटाकर अपना व परिवार का गुजारा कर रही थी, कम उम्र में विवाह हो जाना व घर–परिवार की जिम्मेदारी संभालने के कारण उसकी शिक्षा के प्रति रूचि कम हो जाती है। व घर परिवार की दयनीय **आर्थिक स्थिति** ने उसे घर से बार निकलकर मजदूरी जैसे कार्य करने पर विवश कर दिया है जिससे वह शिक्षा प्राप्ति जैसे कदम से और भी दूर होती चली गई व विद्यालय की पहुँच दूर–दूर होने के कारण कई किलोमीटर चलकर यदि वह विद्यालय जाती तो आने–जाने में लगने वाले समय से अधिक महत्त्व वह घर के कार्यों को दती है क्योकि घर के कार्यों के साथ उसे कृषि कार्य में भी बराबरी का योगदान करना होता है।

सुझावः–

जनजाति बहुल इलाके में विशेषकर जनजाति महिलाओं में जागरूकता लोने के लिए सबसे अच्छा माध्यम शिक्षा हो सकता है इस क्षेत्र में वर्तमान स्थिति को देखा जाये तो यह प्रतीत होता है कि जनजाति लड़किया शिक्षा प्राप्ति के लिए अग्रसर हुई है, परन्तु परिवार की तंगी आर्थिक हालात के कारण वह आगे की पढ़ाई जारी नही रख पाती है अतः जनजाति महिलाओं में शिक्षा के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैः–

1. जनजाति लड़कियों के लिए सरकार प्रत्येक ग्राम पंचायत में पूर्ण सुविधा युक्त छात्रावासों का निर्माण करे, जिसमें उनके विद्यालय व कॉलेज व कौशल शिक्षा प्राप्ति तक रहने का पूर्ण प्रबन्ध हो जिससे भौतिक दूरी के कारण पढ़ाई छोड़ने वाली छात्राओं की संख्या कम हो सकेगी।

2. जनजाति युवतियों को विद्यालयी स्तरीय शिक्षा के पश्चात् कौशल व तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के प्रावधान होना चाहिए, जिससे महिलाओं के अपने कौशल युक्त कार्य के माध्यम से आय अर्जन कर पायेगी, परिवार में आय बढ़ेगी व तंगी हालत के साथ–साथ कम उम्र में विवाह होने जैसी समस्याओं को कम किया जा सकता हैं

3. पढ़ी–लिखी जनजाति महिलाओं को अपने स्थानीय स्तर पर स्थानीय आवश्यकतानुसार मझले उद्यमों की स्थापना हेतु कम ब्याज पर ऋण प्रदान करने व उद्यम को सफल संचालन होने तक सरकार या सहकारी जैसी संस्थाओं को सहयोग प्रदान करना चाहिए। जिससे रोजगार प्राप्ति के साथ गरीबी की समस्या कम होगी व महिलाएँ अपने परिवार व समाज में जागरूकता का कार्य भी करेगी।

4. जनजाति महिलाओं में जागरूकता संबंधी कार्य को पूरा करने के लिए प्रत्येक पंचायत स्तर पर कार्यरत पंचायत सहायकों को पाबन्द करना चाहिए कि वह सरकारी योजनाओं की समस्त जानकारी अपने संबंधित ग्राम पंचायत स्तर पर प्रदान करें। ताकि ग्रामीण क्षेत्र की युवतियों को सही समय पर संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त हो सके। ताकि शिक्षा के इस कम प्रतिशत को पूरा किया जा सकें।

उपसंहारः–

दक्षिण राजस्थान की महिलाएँ स्वतंत्रता के समय विभिन्न परिस्थितियों व पिछडेपन के कारण शिक्षा से वंचित थी, आज इस 21वीं सदीं में इनमें शिक्षा व करियर के प्रति जागृति आई है। यह महत्त्वपूर्ण बदलाव हमें इस 21वीं सदी में अधिक देखने को मिलता है। यहाँ की युवतियाँ न केवल पारम्परिक कार्य में बल्कि चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासनिक,

नर्सिंग, बैंक, सेवा, व्यापार, उद्यम इत्यादि में भागीदारी निभाने लगी है। जो कि समाज में प्रगति का सूचक माना जाने लगा है। साथ ही जनजाति महिलाओं की शिक्षा का व जन चेतना के बढ़ते स्तर की भी सूचक बन रही ळें

REFERENCES

1. समाचार पत्रः दैनिक भास्कर, संवादाता रिपार्ट, उदपुर संस्करण 'लड़कियों की शिक्षा,' श्रनसल 2020 पृ.6

2. समाचार पत्रः भास्कर रिसर्च, 'आबादी पर नियंत्रण और दुनिया को बेहतर बनाने का अच्छा तरीका लड़कियों की शिक्षा, दैनिक भास्कर (उदयपुर संस्करण) 11 जुलाई2020